अध्याय-8

नए प्रश्न : नवीन विचार

पल्लवी की जिज्ञासा

पल्लवी की नानी प्रत्येक रविवार को सुबह–सुबह स्नान कर आश्रम जाती थी। एक दिन पल्लवी ने भी अपनी नानी के साथ चलने की इच्छा व्यक्त की। अगले रविवार को पल्लवी अपनी नानी के साथ आश्रम पहुँची। वहाँ एक साधु बाबा कथा सुना रहे थे। उस कथा में कई ऐसे शब्द थे, जिसका अर्थ पल्लवी नहीं समझ पा रही थी। जैसे–आत्मा, परमात्मा, ब्रह्म आदि।

बच्चों जैसा कि आपने अध्याय छह एवं सात में पढ़ा कि उत्तर वैदिक काल (1000–600 ई0पूर्व0) से लोहे का प्रचलन काफी बढ़ गया। इससे कृषि क्षेत्रों का विस्तार हुआ और कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई। लौह उपकरणों के बढ़ते प्रयोग ने समूची अर्थ व्यवस्था को प्रभावित किया। इसी के आधार पर समाज में अलग–अलग व्यवसायों, व्यापार, वाणिज्य, सिक्कों का प्रचलन एवं नगरों का उदय हुआ।

उत्तर वैदिक काल से वर्ण व्यवस्था और भी जटिल होती जा रही थी। प्रारंभ में यह व्यवस्था कर्म पर आधारित थी बाद में इसका निर्धारण जन्म के आधार पर होने लगा। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र में ब्राह्मण एवं क्षत्रिय समाज के सबसे प्रभावशाली वर्ण थे।

सूद, कर्ज, नगरों, नागरिक जीवन को ब्राह्मण ग्रंथ घृणा एवं तिरस्कार की दृष्टि से देखते थे।

इसमें ब्राह्मणों की स्थिति सबसे अच्छी थी। क्षत्रिय सुविधा प्राप्त वर्ण होने के बावजूद ब्राह्मणों से नीचे थे। वैश्यों के साथ भी यहीं बात थी। आर्थिक क्षेत्र में प्रगति के चलते वे काफी धनवान एवं खुशहाल हो गए थे। कुछ व्यापारियों के पास तो शासकों से भी अधिक धन था, परन्तु वर्ण व्यवस्था के कारण उनका स्थान तीसरा ही था। शुद्रों की हालत तो सबसे दयनीय थी। अतः समाज का प्रत्येक वर्ग, ब्राह्मणों को छोड़कर परिवर्तन चाहता था, जिससे उन्हें भी

समाज में समान अधिकार प्राप्त हो सके। इसके अलावे समाज में जाति प्रथा, दिखावा एवं कर्मकांड आदि बढ़ गये थे। बड़े और खर्चीले यज्ञों में पशुओं की बलि दी जा रही थी। फलतः बड़ी संख्या में पशुओं का सफाया हो रहा था। ऐसी स्थिति में जनसाधारण लोगों के लिए धर्म का पालन बड़ा कठिन हो गया था। लोग एक ऐसी धार्मिक व्यवस्था चाहते थे जिसमें सबके लिए स्थान हो।

ऐसे ही परिस्थिति में लगभग 600 ई0 पू0 के आसपास उपनिषदों का संकलन हुआ। उपनिषद उत्तर वैदिक ग्रंथों का हिस्सा थे। उपनिषद का शाब्दिक अर्थ है **'गुरू के समीप बैठना'।** उपनिषदों में कठिन विषयों जैसे–आत्मा, परमात्मा, ब्रह्म आदि पर चर्चाएँ मिलती हैं। प्रायः ये चर्चाएँ समान वार्तालाप के रूप में मिलती हैं। जैसे–पिता–पुत्र, पति–पत्नि, ब्राह्मण–क्षत्रिय, गुरू–शिष्य एवं जनसाधारण के बीच वार्तालाप। इन वार्तालापों में ज्यादातर पुरूष भाग लेते थे। कभी–कभी गार्गी जैसे स्त्री विचारकों का भी उल्लेख मिलता है। गार्गी राजदरबारों में होनेवाले वाद–विवादों में हमेशा भाग लिया करती थी।

बच्चों ! आपलोगों ने नचिकेता का नाम सुना होगा। नचिकेता आप ही की तरह एक बालक था। उसके मन में एक बार सवाल उठा 'मरने के बाद हमारा क्या होता'? उसे पता चला कि यमराज ही मृत्यु के देवता है। अतः उन्हीं से यह सवाल करना चाहिए। वह निर्भिक होकर सीधे यमराज के पास गया और पूछा 'मरने के बाद हमारा क्या होता है' ?

नचिकेता की कम उम्र को देखते हुए यमराज उसे इस प्रशन का उत्तर नहीं देना चाहते थे। इस प्रश्न के बदले में तुम्हें सोना दूंगा, चांदी दूंगा, गायें दूंगा। मगर तुम इस प्रश्न को न पूछो। इसका उत्तर तो देवता भी नहीं जानते। नचिकेता यमराज के सारे प्रलोभनों को ठुकराकर अपने प्रश्न पर अड़ा रहा उसकी निर्भिकता और इमानदारी से खुश होकर–यमराज ने आत्मा का स्वरूप बताते हुए कहा 'यह आत्मा न जन्म लेती है और न मरती है। न यह किसी दूसरे से उत्पन्न हुई है और न कोई दूसरा ही उससे उत्पन्न हुआ है। शरीर के नष्ट होने पर भी वह नहीं मरती'।

याज्ञवल्क्य और उनकी पत्नी का वार्त्तालाप भी उल्लेखनीय है। याज्ञवल्क्य ने घर छोड़कर जंगलों में रहने की इच्छा व्यक्त की । इस अवसर पर उनकी पत्नी मैत्रायी ने उनसे लम्बी बातचीत (प्रश्नोत्तर के रूप में) की। इस बातचीत का मतलब था कि धन–सम्पत्ति से आदमी बड़ा नहीं होता है । अपने और अपने समाज के लोगों की समस्याओं के बारे में सोंचने से ज्ञान की प्राप्ति होती है। कभी–कभी समाज के गरीब पुरूष भी इस चर्चा में भाग लिया करते थे। सत्यकाम जाबाल एक ऐसा ही गरीब व्यक्ति था। उसके मन में सत्य जानने की इच्छा हुई। इसके लिए वह गौतम नामक ब्राह्मण के पास गया। गौतम ने उसे अपने शिष्य के रूप में स्वीकार किया। आगे चलकर सत्यकाम जाबाल अपने समय के प्रसिद्ध विचारक बन गए।

इस प्रकार छठी शताब्दी ई0 पू0 में, जिस समय जनसाधरण में धर्म के प्रति लगाव कम होता जा रहा था। तत्कालीन समाज में कर्मकाण्डों की प्रधानता बढ़ती जा रही थी। उपनिषदों की शिक्षा ने लोगों को नये ढंग से सोचने एवं विचार करने का रास्ता दिखाया। ऐसी ही परिस्थिति में कुछ विचारकों ने समाज में फैली बुराइयों का विरोध कर नए विचारों और सिद्धान्तों को लोगों के सामने रखा। इन विचारकों में गौतम बुद्ध तथा महावीर प्रमुख थे।

बुद्ध का जन्म 563 ई0 पू.0 नेपाल की तराई में स्थित कपिलवस्तु के लुम्बिनी वन में हुआ था। इनके पिता का नाम शुद्धोधन तथा माता का नाम महामाया था। इनके बचपन का नाम सिद्धार्थ था। सिद्धार्थ बचपन से ही चिंतनशील थे। अन्य बालकों की तरह खेल–कूद में उनकी रूची नहीं थी। वे प्रायः एकान्त में बैठकर जीवन–मरण की गंभीर समस्याओं पर विचार किया करते थे। आगे चलकर यशोधरा से इनका विवाह हुआ। इनके पुत्र का नाम राहुल था।

सिद्धार्थ ने अपने चारों ओर लोगों को कष्ट में पाया। अपने प्रारम्भिक जीवन काल में बुद्ध ने अलग–अलग दुःखों से पीड़ित लोगों को, जैसे– रोगी को, बूढ़े व्यक्ति को, मृतक की अर्थी को एवं एक सन्यासी को देखा। इन दृश्यों को देखने के बाद उनके मन में कई प्रश्न उठे– आदमी क्यों बूढ़ा होता है ? क्यों उसकी मृत्यु होती है आदि ? उन्होंने सोचा संसार के सभी सुख बेकार और कम समय के लिए हैं। अंततः अपने प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए एक रात अपने प्रिय घोड़े पर सवार होकर घर से निकल पड़े।

किसी असहाय और दुःखी व्यक्ति को देखकर आप क्या सोचते हैं?

सिद्धार्थ ने अनेक आर्चायों (गुरूओं) से शिक्षा ग्रहण की। किन्तु उन्हें संतोष नहीं हुआ। इसके बाद उन्होंने छह वर्षों तक कठोर तपस्या की और अंत में अन्न–जल सब त्याग दिया। इसी समय गाने वाली स्त्रियों से उन्होंने ये शब्द सुने। अपने वीणा के तार को इतना मत कसो कि वे टूट जाएँ और न इतना ढीला ही करो कि उनसे संगीत ही न निकले। अर्थात् परिस्थिति के अनुसार ही जीवन जीने की कोशिश करनी चाहिए। सिद्धार्थ ने यह सुनकर मध्यममार्ग को ही ठीक समझा। गया के पास बोधगया में एक पीपल वृक्ष के नीचे उन्हें अपने प्रश्नों का उत्तर मिला, जिसके कारण उन्होंने घर छोड़ा था अर्थात् उन्हें सत्य का ज्ञान मिला। ज्ञान की प्राप्ति के बाद उन्हें बुद्ध कहा जाने लगा और उनके शिष्य बौद्ध कहलाए।

महात्मा बुद्ध ने अपना पहला उपदेश सारनाथ में दिया। यह घटना 'धर्मचक्र प्रवर्तन' कहलाता है। इस घटना को यादगार बनाने के लिए बाद में सम्राट अशोक ने (अशोक के बारे में आप विस्तृत रूप से अगले अध्याय में पढ़ेंगे)। सारनाथ में एक विशाल स्तूप का निर्माण करवाया।

अशोक द्वारा निर्मित सारनाथ का स्तूप

उसके बाद बुद्ध ने मगध, वैशाली और भारत के अन्य जगहों पर घूम–घूमकर अपने उपदेशों को लोगों के सामने रखा। शीघ्र ही उनका बौद्ध धर्म लोकप्रिय हो गया। 80 वर्ष की आयु में 483 ई0पू0 में कुशीनगर (गोरखपुर) में उनकी मृत्यु हुई। मगध के राजा बिम्बिसार उनके प्रमुख अनुयायी बने ।

भगवान बुद्ध एवं बौद्ध भिक्षुओं के मरणोपरान्त उनके शारीरिक अवशेषों पर निर्मित संरचना को स्तूप कहा जाता है। सारनाथ, नालंदा, सांची आदि जगहों पर ऐसे स्तूप देखे जा सकते हैं।

महात्मा बुद्ध का उपदेश देते हुए चित्र

बुद्ध ने जात–पात, ऊँच–नीच के भेदभाव तथा धार्मिक जटिलता को गलत बताया। एक आदमी अच्छा है या बुरा यह बात उसके व्यवहार को देखकर कही जा सकती है। बुद्ध के सिद्धांत को समाज का कोई भी वर्ग अपना सकता था। उन्होंने लोगों को दयालु तथा मनुष्यों के साथ–साथ जानवरों एवं पशु–पक्षियों से भी समान रूप से प्रेम करने की शिक्षा दी।

बुद्ध लोगों को दूसरे की शिक्षा या सिद्धांत को अपने विवेक के आधार पर अपनाने की सलाह देते थे।

जीवों पर दया

एक बार बुद्ध भिक्षाटन के लिए जा रहे थे। रास्ते में एक गड़रिया बहुत सी भेड़ों को हांके लिए जा रहा था। बुद्ध ने देखा भेड़ के एक बच्चे के पैर में चोट लगी हुई है। इसलिए वह लगंड़ा कर चल रहा है। पैर में पीड़ा के कारण वह बार– बार भेड़ों से पीछे रह जाता था। मेमने की माँ अपने बच्चे को बार–बार पीछे मुड़कर देखती थी। बुद्ध से उस मेमने की पीड़ा देखी न गयी। उन्होंने उस बच्चे को गोद में उठा लिया और वे भेड़ के पीछे–पीछे चलने लगे। ऐसे करूनामयी थे, भगवान बुद्ध।

आइए देखें, उन्होंने ऐसा किस प्रकार किया ?

बुद्ध ने अपने विचार लोगों को उनकी ही भाषा पाली में दिया। महात्मा बुद्ध के उपदेश बिल्कुल सीधे–साधे थे। उन्हें सामान्य लोग आसानी से समझ सकते थे।

बुद्ध के अनुसार मनुष्य को चार प्रमुख सिद्धांत (आर्य सत्य) को हमेशा याद करना चाहिये। ये सिद्धांत निम्न हैं–

1. **दुःख** – बुद्ध ने जन्म, मृत्यु, रोग, इच्छित वस्तु की प्राप्ति न होना आदि को दुःख माना है।
2. **दुःख का कारण**– बुद्ध के अनुसार दुःख का मुख्य कारण इच्छा (तृष्णा) है। जब मनुष्य को कोई इच्छित वस्तु नहीं मिल पाती है तब उसे दुःख होता है।
3. **दुःख निरोध** – बुद्ध के अनुसार इच्छाओं पर नियंत्रण कर सांसारिक दुःखों को दूर किया जा सकता है।
4. **दुःख निरोधक मार्ग**– बुद्ध ने दुःखों को दूर करने का मार्ग भी बताया है जिसे आष्टांगिक मार्ग कहते हैं। इसे मध्यममार्ग भी कहा जाता है क्योंकि यह मार्ग न तो अधिक सरल है और न अधिक कठिन। सामान्य व्यक्ति भी अपने जीवन में इन आठ बातों का पालन कर सांसारिक दुःखों से छुटकारा पा सकता है अर्थात परम शान्ति (निर्वाण) को प्राप्त कर सकता है।

इस मार्ग पर चलने के लिए बुद्ध द्वारा बताये गये आठ आदर्श इस प्रकार हैं–

(i) **सम्यक (शुद्ध) दृष्टि** – सत्य–असत्य, पाप, पुण्य अच्छा–बुरा आदि को अच्छे ढंग से समझना।

(ii) **सम्यक संकल्प** – इच्छा और हिंसा से मुक्त विचार सम्यक संकल्प कहलाते हैं।

(iii) **सम्यक वाणी** – अपनी वाणी (बोलचाल) में मनुष्य को विनम्र होना चाहिए।

(iv) **सम्यक कर्म** – व्यक्ति को अपने जीवन में अच्छे व सही कार्य करने चाहियें।

(v) **सम्यक आजीव** – जीवन यापन हेतु सही साधनों का प्रयोग करना चाहिये। हमें झूठ एवं गलत तरीकों से धन नहीं कमाना चाहिये।

(vi) **सम्यक व्यायाम** – सही तथा ज्ञानयुक्त (प्रयत्न) मन से बुरी भावनाओं को दूर रखने का प्रयास।

(vii) **सम्यक चरित्र** – मनुष्य को अच्छे आचरण एवं अच्छी बातों का जीवन में बार–बार प्रयोग करना चाहिये।

(viii) **सम्यक समाधि**– किसी विषय पर एकाग्रचित होकर विचार–विमर्श करना।

बुद्ध के उपरोक्त बताये गये मार्ग पर चलने के बाद मनुष्य आनन्द तथा शान्ति का अनुभव करता है।

बुद्ध ने बौद्ध संघों की स्थापना की जिसमें सभी जातियों के पुरुषों और महिलाओं को शामिल होने की आजादी थी। संघ में प्रवेश लेने वाले लोग अपनी आवश्यकताओं को कम से कम करते हुए, सादा जीवन जीते थे। अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वे भिक्षा मांगते थे। इसी कारण उन्हें भिक्षु (पुरुष) तथा भिक्षुणी (महिला) कहा गया। इनके रहने के स्थान को विहार कहा जाता था।

अपनी सादगी और सरलता के कारण भारत के साथ–साथ विदेशों में भी यह धर्म काफी लोकप्रिय हुआ। श्रीलंका, चीन, जापान, कोरिया, तिब्बत आदि देशों में इसके अनुयायियों की संख्या काफी अधिक है।

भारतीय समाज के सभी पक्षों को बौद्ध धर्म ने प्रभावित किया। सम्राट अशोक ने लोक

कल्याण, अहिंसा, धार्मिक सहिष्णुता तथा साम्राज्य विस्तार न करने का निश्चय बौद्ध धर्म से प्रभावित होकर किया (इसके बारे में आप विस्तृत रूप से आप अगले अध्याय में पढ़ेंगे)।

धार्मिक क्षेत्र में अनेक बदलाव आये। धीरे–धीरे यज्ञ, बलि एवं कर्मकाण्डों में कमी हुई। नालन्दा, विक्रमशिला जैसे बौद्ध मठ स्थापित हुए।

बौद्ध र्धम से जुड़े स्थलों की सूची बनायें। अगर आप को दो स्थलों पर भ्रमण करने का मौका मिलें तो प्रथम दो में किसका चयन करेगें और क्यों ?

जैन धर्म :

इसी समय बौद्ध धर्म की तरह जैन र्धम भी जनसाधारण को अपनी नई विचारधारा से प्रभावित कर रही थी। जैन धर्म के संस्थापक ऋृषभ देव थे। जैन धर्म में कुल चौबीस तीर्थंकरों के होने की बात कही जाती है। तीर्थंकर का अर्थ धर्म का प्रचार करते हुए दूसरे को रास्ता बताने वाला होता है। तीर्थंकरों के क्रम में तेंइसवें थे पार्श्वनाथ जो काशी के अश्वसेन के पुत्र थे।

जैन शब्द ''जिन'' शब्द से निकला है जिसका अर्थ है ''जीतने वाला''।

चौबीसवें तथा अंतिम तीर्थंकर महावीर इस धर्म के सर्वाधिक महत्वपूर्ण विचारक थे। इन्होंने इस धर्म में अपेक्षित सुधार करके इसका व्यापक स्तर पर प्रचार किया।

वर्द्धमान महावीर

महावीर का मूल नाम वर्द्धमान था। वर्द्धमान का जन्म 540 ई0पू0 वैशाली के निकट कुंडग्राम में हुआ था। इनके पिता सिद्धार्थ जातक क्षत्रिय कुल के प्रधान थे। इनकी माता त्रिशला वैशाली की लिच्छवी राजकुमारी थी।

लिच्छवी राज्य था या गणराज्य पता करें ?

वर्द्धमान का विवाह 'यशोदा नामक राजकुमारी से हुआ था। तीस वर्ष की उम्र में वर्द्धमान ने राजमहल की सारी सुख–सुविधाओं को त्याग कर घर छोड़ दिया और जंगल में रहने लगे। बारह वर्ष की कठोर तपस्या के बाद उन्हें ज्ञान(कैवल्य) की प्राप्ति हुई।

महात्मा बुद्ध एवं भगवान महावीर के प्रारंभिक जीवन में आप क्या समानताएँ पाते हैं चर्चा किजीए ?

ज्ञान प्राप्ति के बाद वे महावीर कहलाए। बहत्तर वर्ष की उम्र में 468 ई0पू0 में पावापूरी में उनकी मृत्यु हुई।

पावापुरी का जल मंदिर

भगवान बुद्ध की तरह महावीर के उपदेश सरल थे। जैन धर्म में सदाचार या अच्छे आचरण के लिए कई सुझाव बताए गए हैं। जैन धर्म में अंहिसा का मुख्य स्थान है। भगवान महावीर का मानना था कि पशु–पक्षियों, पेड़–पौधों और हवा में उपस्थित अदृश्य कीटाणुओं में भी जीवन है। इसलिए जैन साधु मुँह और नाक पर कपड़ा बाँध कर चलते हैं ताकि हवा द्वारा कीड़े उनकी नाक में पहुँच कर नष्ट न हो जाएँ। स्मरण करें भगवान बुद्ध ने भी अंहिसा को अपनाने की बात कही थी।

मुँह और नाक पर कपड़ा बाँधने या ढ़कने से और क्या–क्या फायदे हो सकते हैं? चर्चा किजीए।

जैन धर्म के अनुसार मनुष्य को सत्य का सहारा लेकर जीवन जीने की कोशिश करनी चाहिए। सत्यपूर्वक जीने के लिए मनुष्य को क्रोध, लोभ और भय तीनों का परित्याग करना चाहिए।

महावीर ने लोगों से चोरी न करने की बात कही थी। बिना आज्ञा एवं अनुमति के हमें दूसरों का सामान नहीं लेना चाहिए। इसके साथ ही ईमानदारी पर बल देते हुए। आवश्यकता से अधिक धन का संग्रह न करने की बात कही थी। भगवान बुद्ध की तरह अच्छे चरित्र निमार्ण के लिए महावीर ने लोगों से ब्रह्मचर्य का पालन करने की बात कही। इसका अर्थ है मनुष्य को अपने मन पर नियंत्रण रखना चाहिए।

महावीर ने अपनी शिक्षा आम लोगों की भाषा प्राकृत में दी। देश के अलग–अलग हिस्सों में प्राकृत के अलग–अलग रूप प्रचलित थे। जैसे–मगध में बोले जाने वाली प्राकृत मागधी कहलाती थी। महावीर ने सभी मनुष्यों को समान माना, इन्होंने स्त्रियों को पुरूषों के समान संघ में प्रवेश देना स्वीकार किया।

स्मरण करें : उपनिषदों में गार्गी जैसे स्त्री विचारकों का उल्लेख है। भगवान बुद्ध ने भी अपने संघ में स्त्रियों को प्रवेश की आजादी दी थी। बुद्ध तथा महावीर दोनों का मानना था कि घर का त्याग करने पर ही सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। ऐसे लोगों के लिए उन्होंने संघ नामक संगठन बनाया। जहाँ घर का त्याग करने वाले लोग एक साथ रह सकें।

महावीर ने अपने उपदेशों में कर्म की प्रधानता दी। उनके अनुसार मनुष्य भी अच्छे कार्यों द्वारा पूजनीय बन सकता है। जीवन का उद्देश्य आनंद की प्राप्ति। इस प्राप्ति के लिए जैन धर्म में तीन मार्ग बताए गए हैं।

सम्यक दर्शन : आत्मा सभी जीवधारियों के शरीर में निवास करती है। इसलिए मनुष्य को सभी प्राणियों को अपने समान समझना चाहिए।

सम्यक ज्ञान : सम्यक दर्शन से सम्यक ज्ञान की प्राप्ति होती है और मनुष्य को अज्ञानता, क्रोध, लोभ, मोह आदि से छुटकारा मिल जाता है

सम्यक चरित्र : इसका अर्थ अच्छे आचरण एवं व्यवहार से है। अपने विचारों और बोली पर नियंत्रण रखने से अच्छे चरित्र की प्राप्ति होती है।

जैन धर्म में इसे 'त्रि–रत्न' भी कहा गया है। जैन धर्म के अनुयायियों का ऐसा मानना है कि इस मार्ग पर चलने से मनुष्य जीवन–मरण के दु:खों से छुटकारा पा सकता है।

बौद्ध धर्म के 'आष्टांगिक मार्ग' की तुलना जैन धर्म के 'त्रि–रत्न' से किजीए।

अभ्यास

आइए याद करें :

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

(क) गौतम बुद्ध का जन्म कब हुआ था ?

(i) 563 ई०पू०   (ii) 463 ई०पू०

(iii) 540 ई०पू०   (iv) 551 ई०पू०

(ख) जैन र्धम के संस्थापक कौन थे ?

(I) पार्श्वनाथ   (ii) ऋषभदेव

(iii) महावीर   (iv) गौतमबुद्ध

(ग) महावीर ने कब निर्वाण (मृत्यु) प्राप्त किया?

(i) 438 ई०पू०   (ii) 468 ई०पू०

(iii) 322 ई०पू०   (iv) 298 ई०पू०

(घ) जल मंदिर कहाँ अवस्थित है ?

(i) पावापुरी   (ii) राजगृह

(iii) नालन्दा   (iv) वैशाली

2. निम्नलिखित शब्दों की सहायता से खाली स्थानों को भरिए।

(i) महात्मा बुद्ध ने अपना पहला उपदेश सारनाथ में दिया। यह घटना .... कहलाता है।

(ii) बुद्ध ने जीवन जीने के लिए...............अपनाने की सलाह दी।

(iii) नचिकेता की कहानी...............से ली गई है।

(iv) उपनिषदों में...............विषयों पर चर्चा मिलती है।

(v) महावीर के लिए...............शब्द का प्रयोग हुआ है।

(vi) बौद्ध और जैन संघों के अनुयायी...............मांग कर खाते थे।

3. निम्नलिखित को सुमेलित करें।

(i)	बोधगया	(क)	बौद्ध धर्म का अनुयायी
(ii)	गार्गी	(ख)	उपनिषद्
(iii)	त्रि–रत्न	(ग)	एक प्रमुख स्त्री विचारक
(iv)	विचारों का संकलन	(घ)	जैन धर्म
(v)	बिम्बिसार	(ङ)	महात्मा बद्ध

4. गौतम बुद्धके अनुसार – दु:ख क्यों होता है?

5. महावीर के उपदेशों को लिखें।

6. उपनिषद् में किन विचारों का उल्लेख है?

बातचीत कीजिए / आओ चर्चा करें।

7. क्या वास्तव में बुरे या अच्छे काम से कोई अंतर नहीं पड़ता है ? आप अपने आस–पास के उदाहरणों को ध्यान में रखकर चर्चा कीजिए।

कुछ करके देखिए/आओ करके देखें।

8. कुछ ऐसे विचारकों का पता लगाओ जिन्होंने सुख सुविधाओं का त्याग कर समाज के लोगों को एक नई दिशा दी।

9. उपनिषद में वर्णित कुछ ऐसी कहानियों का संकलन करें जिसके प्रमुख पात्र। आप ही के जैसा कोई बालक था।